खीणकसायाणं लेस्साभावो पसज्जदे ? सच्चमेदं जदि कसाओदयादो चेव लेस्सुप्पत्ती इच्छिज्जदि। किंतु सरीरणामकम्मोदयजणिदजोगो वि लेस्सा त्ति इच्छिज्जदि, कम्मबंधणिमित्तत्तादो। तेण कसाए फिट्टे वि जोगो अत्थि त्ति खीणकसायाणं सलेस्सत्तं ? ण विरुज्झदे। जदि बंधकारणाणं लेस्सत्तं उच्चदि तो पमादस्स वि लेस्सत्तं किण्ण इच्छिज्जदि ? ण, तस्स कसाएसु अंतब्भावादो। असंजमस्स किण्ण इच्छिज्जदि' ण, तस्स वि लेस्सायम्मे अंतब्भावादो। मिच्छत्तस्स किण्ण इच्छिज्जदि ? होदु तस्स लेस्साववएसो, विरोहाभावादो। किंतु कसायाणं चेव एत्थ पहाणत्तं हिंसादिलेस्सायम्मकारणादो, सेसेसु तदभावादो।

अलेस्सिओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६२ ॥

एत्थ वि णिक्खेवमस्सिदूण परूवणा कादव्वा।

बारहवें गुणस्थानवर्ती क्षीणकषाय जीवोंके लेश्याके अभावका प्रसंग आता है ?

समाधान—सचमुच ही क्षीणकषाय जीवोंमें लेश्याके अभावका प्रसंग आता यदि केवल कषायोदयसे ही लेश्याकी उत्पत्ति मानी जाती। किन्तु शरीरनामकर्मके उदयसे उत्पन्न योग भी लेश्या है यह स्वीकार किया जाता है, क्योंकि, वह भी कर्मके बन्धमें निमित्त होता है। इस कारण कषायके नष्ट हो जानेपर भी चूंकि योग रहता है इसीलिये क्षीणकषाय जीवोंको लेश्यासहित माननेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका—यदि बन्धके कारणोंको लेश्यारूप कहा जाता है तो प्रमादको भी लेश्यारूप क्यों नहीं स्वीकार किया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रमादका कषायोंमें अन्तर्भाव हो जाता है।

शंका—असंयमको भी लेश्याभाव क्यों नहीं मानते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि असंयमका भी लेश्याकर्ममें अन्तर्भाव हो जाता है।

शंका—मिथ्यात्वको लेश्यारूप क्यों नहीं स्वीकार करते ?

समाधान—मिथ्यात्वकी लेश्या संज्ञा होवे, क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेमें कोई विरोध नहीं आता। किन्तु यहां कषायोंका ही प्राधान्य है, क्योंकि कषाय ही हिंसा आदिरूप लेश्याकर्मके कारण हैं और अन्य बन्धकारणोंमें उनका अभाव है।

जीव अलेश्यिक कैसे होता है ? ॥ ६२ ॥

यहां भी निक्षेपके आश्रयसे प्ररूपणा करनी चाहिये।

खइयाए लद्धीए ॥ ६३ ॥

लेस्साए कारणकम्माणं खएणुप्पण्णजीवपरिणामो खइया लद्धी, तीए अलेस्सिओ होदि त्ति उत्तं होदि । ण सरीरणामकम्मसंतस्स अत्थित्तं पडुच्च खइयत्तं विरुज्झदे, तस्स तंतत्ताभावादो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिओ अभवसिद्धिओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६४ ॥

सुगममेदं ।

पारिणामिएण भावेण ॥ ६५ ॥

एदं पि सुगमं ।

णेव भवसिद्धिओ णेव अभवसिद्धीओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६६ ॥

एदं पि सुगमं ।

खइयाए लद्धीए ॥ ६७ ॥

सुगममेदं ।

क्षायिक लब्धिसे जीव अलेश्यिक होता है ॥ ६३ ॥

लेश्याके कारणभूत कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न हुए जीव-परिणामको क्षायिक लब्धि कहते हैं; उसी क्षायिक लब्धिसे जीव अलेश्यिक होता है यह सूत्रका तात्पर्य है। शरीरनामकर्मकी सत्ताका होना क्षायिकत्वके विरुद्ध नहीं है, क्योंकि क्षायिक भाव शरीरनामकर्मके आधीन नहीं है।

भव्यमार्गणानुसार जीव भव्यसिद्धिक व अभव्यसिद्धिक किस कारणसे होता है ? ॥ ६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

पारिणामिक भावसे जीव भव्यसिद्धिक व अभव्यसिद्धिक होता है ॥ ६५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

जीव न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक किस कारणसे होता है ॥ ६६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

क्षायिक लब्धिसे जीव न भव्यसिद्धिक न अभव्यसिद्धिक होता है ॥ ६७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ६८ ॥

किमोदइएण किमुवसमिएण किं खइएण किं खओवसमिएण किं पारिणामिएणेत्ति बुद्धीए काऊणेवं कधं होदि त्ति वुत्तं ।

उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लद्धीए ॥ ६९ ॥

दंसणमोहणीयस्स उवसमेण उवसमसम्मत्तं होदि, खएण खइयं होदि, खओवसमेण वेदगसम्मत्तं । एदेसिं तिण्हं सम्मत्ताणं जमेयत्तं तं सम्माइट्ठी णाम । तिस्से इमे तिण्णि भावा जेण अत्थि तेण सम्माइट्ठी उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लद्धीए होदि त्ति उत्तं । कधमेयस्स तिण्णि भावा ? ण, पुधसामण्णस्स एक्कस्स अक्कमेणाणेयवण्णाणं जहा विरोहो णत्थि तहा एयस्स बहुपरिणामेहि विरोहाभावादो ।

खइयसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७० ॥

सुगममेदं ।

सम्यक्त्वमार्गणानुसार जीव सम्यग्दृष्टि किस कारणसे होता है ? ॥ ६८ ॥

क्या औदयिक भावसे सम्यग्दृष्टि होता है क्या औपशमिक भावसे, क्या क्षायिक भावसे क्या क्षायोपशमिक भावसे, क्या पारिणामिक भावसे ऐसा मनमें विचार कर पूछा गया है किस कारणसे होता है ।

औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक लब्धिसे जीव सम्यग्दृष्टि होता है ॥ ६९ ॥

दर्शनमोहनीयके उपशमसे उपशम सम्यक्त्व होता है, क्षयसे क्षायिक सम्यक्त्व होता है, और क्षयोपशमसे वेदक सम्यक्त्व होता है इन तीनों सम्यक्त्वोंका जो एकत्व है उसीका नाम सम्यग्दृष्टि है । चूंकि उस सम्यग्दृष्टिके ये तीन भाव होते हैं, इसीलिये सम्यग्दृष्टि औपशमिक, क्षायिक व क्षायोपशमिक लब्धिसे होता है, ऐसा कहा गया है ।

शंका—एक ही सम्यग्दृष्टिके तीन भाव कैसे होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जैसे पृथग्भूत सामान्य एकके एक साथ अनेक वर्णोंके होनेमें कोई विरोध नहीं आता, उसी प्रकार एक ही सम्यग्दर्शनके अनेक परिणामरूप होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि किस कारणसे होता है ? ॥ ७० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

खइयाए लद्धीए ॥ ७१ ॥

दंसणमोहणीयस्स णिस्सेसविणासो खओ णाम। तम्हि उप्पण्णजीवपरिणामो लद्धी णाम। तीए लद्धीए खइयसम्माइट्ठी होदि।

वेदगसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७२ ॥

सुगममेदं।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ७३ ॥

तं जहा- सम्मत्तदेसघादिफद्दयाणमणंतगुणहाणीए उदयमागदाणमइदहरदेसघादित्तणेण उवसंताणं जेण खओवसमसण्णा अत्थि तेण तत्थुप्पण्ण जीवपरिणामो खओवसमलद्धीसण्णिदो। तीए खओवसमलद्धीए वेदगसम्मत्तं होदि।

उवसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७४ ॥

सुगमं।

उवसमियाए लद्धीए ॥ ७५ ॥

क्षायिक लब्धिसे जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि होता है ॥ ७१ ॥

दर्शनमोहनीय कर्मके निश्शेष विनाशको क्षय कहते हैं, और उस क्षयसे जो जीवपरिणाम उत्पन्न होता है वह क्षायिक लब्धि कहलाती है। उसी क्षायिक लब्धिसे जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि होता है।

जीव वेदकसम्यग्दृष्टि किस कारणसे होता है ॥ ७२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

क्षायोपशमिक लब्धिसे जीव वेदकसम्यग्दृष्टि होता है ॥ ७३ ॥

सम्यक्त्वप्रकृतिरूप देशघातिस्पर्धकोंकी अनन्तगुणी हानि होनेसे उदयमें आये हुए अति अल्प देशघातिपनेकी अपेक्षा उपशान्त हुए उन (सम्यक्त्व प्रकृतिके स्पर्धकों) का चूंकि क्षयोपशम नाम दिया गया है, इसलिये उस क्षयोपशमसे उत्पन्न जीवपरिणामको क्षयोपशम लब्धि कहते हैं। उसी क्षयोपशम लब्धिसे वेदक सम्यक्त्व होता है।

जीव उपशमसम्यग्दृष्टि किस कारणसे होता है ॥ ७४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

औपशमिक लब्धिसे जीव उपशमसम्यग्दृष्टि होता है ॥ ७५ ॥

कुदो ? दंसणमोहणीयस्स उवसमेणेवस्सुप्पत्तिदंसणादो ।

सासणसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७६ ॥

एत्थ पुव्वं व णिक्खेवे काऊण णोआगमदो भावसासणसम्माइट्ठी घेत्तव्वो। सो कधं होदि केण पयारेण होदि त्ति पुच्छा ।

पारिणामिएण भावेण ॥ ७७ ॥

एसो सासणपरिणामो खईओ ण होदि, दंसणमोहक्खएणाणुप्पत्तीदो। ण खओवसमिओ वि, देसघादिफद्दयाणमुदएण अणुप्पत्तीए । उवसमिओ वि ण होदि, दंसणमोहुवसमेणाणुप्पत्तीदो। ओदइओ वि ण होदि, दंसणमोहस्सुदएणाणुप्पत्तीदो। पारिसेसादो पारिणामिएण भावेण सासणो होदि। अणंताणुबंधीणमुदएण सासणगुणस्सुवलंभादो ओदइओ भावो किण्ण उच्चदे ? ण, दंसणमोहणीयस्स उदय-उवसम-खयखओवसमेहि विणा उप्पज्जदि त्ति सासणगुणस्स पारिणामिय भावब्भुवगमादो । णाणंताणुबंधीणमुदओ सासणगुणस्स कारणं, चरित्तमोहणीयस्स[1] तस्स दंसण-

---

क्योंकि, दर्शनमोहनीय कर्मके उपशमसे उपशम सम्यक्त्वकी उत्पत्ति देखी जाती है।

जीव सासादनसम्यग्दृष्टि किस कारणसे होता है ॥ ७६ ॥

यहां पहलेके समान निक्षेपोंको करके नोआगम भावसासादनसम्यग्दृष्टिका ग्रहण करना चाहिये। वह सासादनसम्यग्दृष्टि कैसे होता है अर्थात् किस प्रकारसे होता है ऐसी सूत्रमें पृच्छा की गई है।

पारिणामिक भावसे जीव सासादनसम्यग्दृष्टि होता है ॥ ७७ ॥

यह सासादन परिणाम क्षायिक नहीं होता, क्योंकि, दर्शनमोहनीयके क्षयसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती। सासादन परिणाम क्षायोपशमिक भी नहीं है, क्योंकि, दर्शनमोहनीयके देशघाती स्पर्धकोंके उदयसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती। सासादन परिणाम औपशमिक भी नहीं है, क्योंकि, दर्शनमोहनीयके उपशमसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती। सासादन परिणाम औदायिक भी नहीं है, क्योंकि, दर्शनमोहनीयके उदयसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती। अतएव पारिशेष न्यायसे परिणामिक भावसे सासादन परिणाम होता है।

शंका—वह उत्पन्न अनन्तानुबन्धी कषायोंके उदयसे सासादन गुणस्थान उपलब्ध होता है, अतएव उसे औदायिक भाव क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, दर्शनमोहनीयके उदय, उपशम, क्षय व क्षयोपशमके विना उत्पन्न होता है, इसलिये सासादन गुणस्थानका पारिणामिक भाव स्वीकार किया है। नियमसे अनन्तानुबन्धीका उदय सासादन गुणस्थानका कारण नहीं है, क्योंकि वह चारित्रमोहनीय है, इसलिये उसे

---

१ मु. प्रती सासणगुणस्सकारणं, चारित्तमोहणीयं तस्स इति पाठः।

मोहणीयत्तविरोहादो । अणंताणुबंधीचदुक्कं तदुभयमोहणं[1] चे ? होदु णाम, किंतु णेदमेत्थ विवक्खियं । अणंताणुबंधीचदुक्कं चरित्तमोहणीयं चेवेत्ति विवक्खाए सासणगुणो पारिणामिओ त्ति भणिदो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७८ ॥

सुगमं ।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ७९ ॥

सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण सम्मामिच्छादिट्ठी जदो होदि तेण तस्स खओवसमिओ भावो त्ति ण जुज्जदे ? होदु णाम सम्मत्तं पडुच्च सम्मामिच्छत्तफद्दयाणं सव्वघादित्तं, किंतु असुद्धणए विवक्खिए ण सम्मामिच्छत्तफद्दयाण सव्वघादित्तमत्थि, तेसिमुदए संते वि मिच्छत्तसंवलिदसम्मत्तकणस्सुवलंभादो । ताणि सव्वघादिफद्दयाणि उच्चंति जेसिमुदएण सव्वं घादिज्जदि[2] । ण च एत्थ सम्मत्तस्स णिम्मूल-

---

दर्शनमोहनीय माननेमें विरोध आता है।

शंका— अनन्तानुबन्धीचतुष्क दर्शन और चारित्र दोनोंका मोहन करनेवाला है ?

समाधान— भले ही अनन्तानुबन्धीचतुष्क उभयमोहनीय हो, किन्तु यहां वैसी विवक्षा नहीं है। अनन्तानुबन्धीचतुष्क चारित्रमोहनीय ही है, इसी विवक्षासे सासादन गुणस्थानको पारिणामिक कहा है।

जीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि किस कारणसे होता है ॥ ७८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

क्षायोपशमिक लब्धिसे जीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि होता है ॥ ७९ ॥

शंका— चूंकि सम्यग्मिथ्यात्व नामक दर्शनमोहनीय प्रकृतिके सर्वघाती स्पर्धकोंके उदयसे जीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि होता है, इसलिये उसके क्षायोपशमिक भाव नहीं बनता है ?

समाधान— सम्यक्त्वकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वके स्पर्धकोंमें सर्वघातीपना भले ही हो किन्तु अशुद्धनयकी विवक्षासे सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिके स्पर्धकोंमें सर्वघातीपना नहीं होता, क्योंकि, उनका उदय रहनेपर भी मिथ्यात्वमिश्रित सम्यक्त्वका कण पाया जाता है। सर्वघाती स्पर्धक तो उन्हें कहते हैं जिनका उदय होनेसे मूल (प्रतिपक्षी गुण) घात हो जाता जन्म है। किन्तु सम्यग्मिथ्यात्वमें तो हम

१ अ. प्रती— मोहेणं इति पाठः। २ अ. आ. प्रत्योः 'होदिज्जदि' इति पाठः।

विणासं पेच्छामो, सब्भूदासब्भूदत्थेसु तुल्लसद्दहणदंसणादो । तदो जुज्जदे सम्मामिच्छत्तस्स खओवसमिओ भावो त्ति ।

मिच्छाविट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ८० ॥

सुगमं

मिच्छत्तस्सकम्मस्स[1] उदएण ॥ ८१ ॥

एदं पि सुगमं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८२ ॥

सुगमं ।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ८३ ॥

णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणं जादिवसेण अणंतगुणहाणीए हाइदूण देसघादित्तं पाविय उवसंताणमुदएण सण्णित्तदंसणादो ।

असण्णी णाम कधं भवदि कधं भवदि ? ॥ ८४ ॥

सम्यक्त्वका निर्मूल विनाश नहीं देखते, क्योंकि यहां सद्भूत और असद्भूत पदार्थोंमें समान श्रद्धान होता देखा जाता है । इसलिये सम्यग्मिथ्यात्वका क्षायोपशमिक भाव बन जाता है ।

जीव मिथ्यादृष्टि किस कारणसे होता है ? ॥ ८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यात्वकर्मके उदयसे जीव मिथ्यादृष्टि होता है ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

संज्ञीमार्गणानुसार जीव संज्ञी किस कारणसे होता है ? ॥ ८२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्षायोपशमिक लब्धिसे जीव संज्ञी होता है ॥ ८३ ॥

क्योंकि, नोइन्द्रियावरण कर्मके सर्वघाती स्पर्धकोंके अपनी जातिविशेषके कारण अनन्तगुणी हानिरूप घातके द्वारा देशघातीपनेको प्राप्त होकर उपशान्त हुए उनके उदय संज्ञिपना देखा जाता है ।

जीव असंज्ञी किस कारणसे होता है ॥ ८४ ॥

---

१ मु. प्रतौ मिच्छत्तकम्मस्स इति पाठः ।

सुगमं ।

ओदइएण भावेण ॥ ८५ ॥

णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण असण्णित्तस्स दंसणादो । ण च णोइंदियावरणमसिद्धं कज्जण्णय-वदिरेगेहि कारणस्स अत्थित्तसिद्धीदो ।

णेव सण्णी णेव असण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८६ ॥

सुगममेदं ।

खइयाए लद्धीए ॥ ८७ ॥

णाणावरणस्स णिम्मूलक्खएणुप्पण्णपरिणामो णोइंदियणिरवेक्खलक्खणो[1] खइया लद्धी णाम । तीए खइयाए लद्धीए णेव-सण्णी-णेव-असण्णित्तं होदि ।

आहाराणुवादेण आहारो णाम कधं भवदि ? ॥ ८८ ॥

सुगममेदं ।

ओदइएण भावेण ॥ ८९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदयिक भावसे जीव असंज्ञी होता है ॥ ८५ ॥

क्योंकि, नोइन्द्रियावरणकर्मके सर्वघाती स्पर्धकोंके उदयसे असंज्ञीपना देखा जाता है। नोइन्द्रियावरण कर्म असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, कार्यके अन्वय और व्यतिरेकके द्वारा कारणके अस्तित्वकी सिद्धि हो जाती है ।

जीव न संज्ञी न असंज्ञी किस कारणसे होता है ? ॥ ८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्षायिक लब्धिसे जीव न संज्ञी न असंज्ञी होता है ॥ ८७ ॥

ज्ञानावरण कर्मके निर्मूल क्षयसे जो नोइन्द्रियनिरपेक्ष लक्षणवाला जीवपरिणाम उत्पन्न होता है उसीको क्षायिक लब्धि कहते हैं। उसी क्षायिक लब्धिसे जीव न संज्ञी न असंज्ञी होता है ।

आहारमार्गणानुसार जीव आहारक किस कारणसे होता है ? ॥ ८८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदयिक भावसे जीव आहारक होता है ? ॥ ८९ ॥

---

1 मु. प्रतौ इंदियणिरवेक्खलक्खणो इति पाठः।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमुदएण आहारो' होदि । तेजा-कम्मइयाण-मुदएण आहारो किण्ण वुच्चदे ? ण, विग्गहगदीए वि आहारित्तप्पसंगादो । ण च एवं, विग्गहगदीए अणाहारित्तदंसणादो ।

अणाहारो णाम कधं भवदि ? ॥ ९० ॥

सुगममेदं ।

ओदइएण भावेण पुण खइयाए लद्धीए ॥ ९१ ॥

अजोगिभयवंतस्स सिद्धाणं च अणाहारत्तं खइयं घादिकम्माणं सव्वकम्माणं च खएण । विग्गहगदीए पुण ओदइएण भावेण तत्थ. सव्वकम्माणमुदयदंसणादो ।

एवमेगजीवेण सामित्तं णाम अणियोगद्दारं समत्तं ।

औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरनामकर्म प्रकृतियोंके उदयसे जीव आहारक होता है ।

शंका—तैजस और कार्मण शरीरनामकर्म प्रकृतियोंके उदयसे जीव आहारक क्यों नहीं होता ।

समाधान—नहीं, क्योंकि वैसा माननेपर विग्रहगतिमें भी जीवके आहारक होनेका प्रसंग होता है । और वैसा है नहीं, क्योंकि. विग्रहगतिमें जीवके अनाहारकपना देखा जाता है ।

जीव अनाहारक किस कारणसे होता है ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदयिक भावसे तथा क्षायिक लब्धिसे जीव अनाहारक होता है ॥ ९१ ॥

अयोगिकेवली भगवान् और सिद्धोंके अनाहारकपना क्षायिक होता है, क्योंकि, उनके क्रमशः घातिया कर्मोंका व समस्त कर्मोंका क्षय होता है । किन्तु विग्रहगतिमें औदयिक भावसे अनाहारकपना होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें सभी कर्मोंका उदय देखा जाता है ।

इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

१ म प्रती वाहारो इति पाठः ।